ईराक की पुस्तक रक्षक

सच्ची कहानी से प्रेरित

हरक एलन स्टैमटी

ईराक की पुस्तक रक्षक

सच्ची कहानी से प्रेरित

"सुपर-हीरो" एक ऐसा शब्द है जो आजकल बहुत सुनने को मिलता है. "सुपर-हीरो" हम ऐसे काल्पनिक व्यक्ति को मानते हैं जो बेहद ताकतवर और प्रभावशाली हो जो असंभव काम कर पाए.

यह कहानी एक अलग प्रकार के "सुपर-हीरो" के बारे में है. वो एक असली इंसान के जीवन की सही घटनाओं पर आधारित है. उसे दीवारों के पार देखने, या आसमान में उड़ने की ज़रुरत नहीं थी.

उनका नाम आलिया है. वो एक महिला हैं और ईराक में काम करती हैं.

2003 का साल है. ईराक बड़े संकट में है. ईराक पर एक तानाशाह सद्दाम हसैन का क्रूर शासन है. उससे सभी लोग घृणा करते हैं.

पूरी दुनिया भी संकट में है. अमेरीका और ब्रिटेन से सेनाएँ, ईराक पर हमला करके सद्दाम को सत्ता से हटाना चाहती हैं.

युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं. पर उसके बावजूद ईराकी लोग अपनी दिनचर्या ज़ारी रखे हैं.

हर सुबह आलिया अपने काम पर ड्राइव करके जाती है. अक्सर वो दुनिया की समस्याओं के बारे में सोचकर परेशान होती है. फिर भी उसके दिल में एक बड़ी खुशी है.

आलिया को अपनी नौकरी से बेहद प्यार है ...

... वो बसरा केंद्रीय पुस्तकालय की चीफ लाइब्रेरियन है ...

... वो हमेशा अपनी पसंदीदा चीज़ों से घिरी रहती है : **किताबों** से!

जब आलिया एक छोटी लड़की थी, तभी से किताबों ने उसकी ज़िंदगी में प्यार और खुशियां भरीं थीं.

किताबों ने उसे दुनिया की तमाम चीज़ों के बारे में सिखाया था, जिसमें उसके खुद के महान देश की सभ्यता का रोचक इतिहास शामिल था ...

.. उसने प्राचीन काल की अनेकों जनजातियों, सभ्यताओं, राजाओं और हमलावरों के बारे में पढ़ा था.

किताबों से ही आलिआ ने 1,300 साल पुरानी महान मुस्लिम सभ्यता के बारे में जानकारी हासिल की थी जिसने अद्भुत इमारतें और शहर बसाए थे और जो उस समय दुनिया में व्यापार, विज्ञान और संस्कृति में सबसे अग्रणी थी.

किताबों से ही उसने 500 साल पहले क्रूर मंगोल आक्रमण के बारे में पढ़ा था जिसने उस पुरानी सभ्यता को नष्ट किया था, और जिसने बगदाद के महान पुस्तकालय को जलाकर ख़ाक में मिलाया था. उसमें तमाम बेशकीमती पुस्तकें नष्ट हो गईं.

पुराने इतिहास के ज्ञान ने आलिआ को अपनी लाइब्रेरी की बेशकीमती किताबों के प्रति संवेदनशील बनाया. बसरा के पुस्तकालय में हज़ारों किताबें थीं. आलिया रोज़ाना उन किताबों की ख़ुशी सैकड़ों लोगों में बांटती थी.

पर आक्रमण की ख़बरें लगातार आ रही थीं. और उससे आलिया की परेशानी लगातार बढ़ रही थी.

अक्सर वो अपने पति से युद्ध के बारे में चर्चा करती थीं.

मुझे बहुत डर लगता है, कि कहीं मेरी लाइब्रेरी को कोई नुक्सान न पहुंचे .... क्योंकि युद्ध बहुत जल्दी ही अनियंत्रित हो सकता है.

सरकारी अधिकारी पर आलिआ की बात का कोई असर नहीं पड़ा. उसने एक उच्च अफसर को फोन किया,

लेकिन उन किताबों के नष्ट होने से हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता, हमारे इतिहास के सभी रिकॉर्ड नष्ट हो जाएंगे.

उसके एक सप्ताह बाद युद्ध शुरू हो गया.

अगले दिन जब आलिया काम पर गई तो उसे बहुत परेशान करने वाला नज़ारा दिखा.

लाइब्रेरी की छत पर सरकारी सैनिक एंटी-एयरक्राफ्ट बंदूकों के साथ दुश्मन के हवाईजहाज़ों को मारकर गिराने के लिए तैनात थे. और लाइब्रेरी के अंदर सरकारी अफसर मौजूद थे जो युद्ध की तैयारी में मदद कर रहे थे. इसका क्या हश्र होगा, यह आलिआ को पता था.

सद्दाम अपनी फौज को बचाने के लिए लाइब्रेरी का इस्तेमाल कर रहा था..... या कहें तो दुश्मन को लाइब्रेरी पर बमबारी करने को मज़बूर कर रहा था जिससे दुश्मन दुनिया को, "कातिल" और "खौफनाक" लगे.

अब मुझे कुछ करना ही पड़ेगा!

पूरे दिन आलिया सोचती रही, योजना बनाती रही. शाम तक उसके दिमाग में एक अच्छा विचार आया.

शाम को छुट्टी के समय आलिआ किताबों के एक शेल्फ के पास गई और उसने अपने हैंड-बैग में कुछ किताबें भरीं. फिर उसने अपनी दोनों बगलों के नीचे भी किताबें छिपाईं.

फिर किताबों का लोड लेकर आलिया धीरे-धीरे सरकारी अफसरों के सामने से होकर हाल में से लॉबी में से गुज़रकर लाइब्रेरी के बाहर गई.

अपनी कार तक पहुंचते-पहुँचते आलिआ के दोनों कँधे और बाज़ू किताबों के बोझ से दुःख रहे थे.

फिर उसने इधर-उधर देखा. किसी ने भी उसे देखा नहीं था. फिर उसने किताबों को कार के बूट में डाला. उसके बाद वो और किताबें लेने वापिस गई.

सभी सरकारी अफसर, युद्ध के कामकाज में व्यस्त थे. किसी को भी महिला लाइब्रेरियन के आने-जाने पर कोई संदेह नहीं हुआ.

आलिआ ने इस तरह कई चक्कर लगाए. अंत में उसने कार का बूट और पिछली सीट को किताबों से भरा और उन्हें कालीन और अपने शाल से ढंक दिया. फिर वो कार में घर गई.

पति ने किताबें घर के अंदर ले जाने में मदद की. उन्होंने किताबों को एक कमरे में ढेर बनाकर रखा.
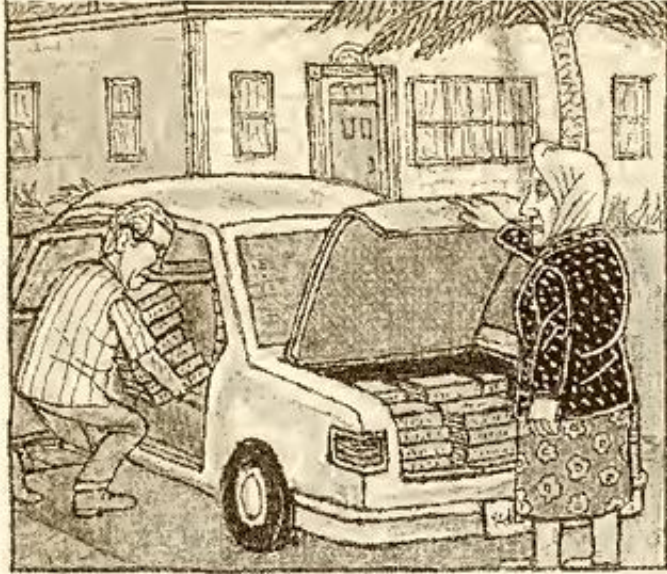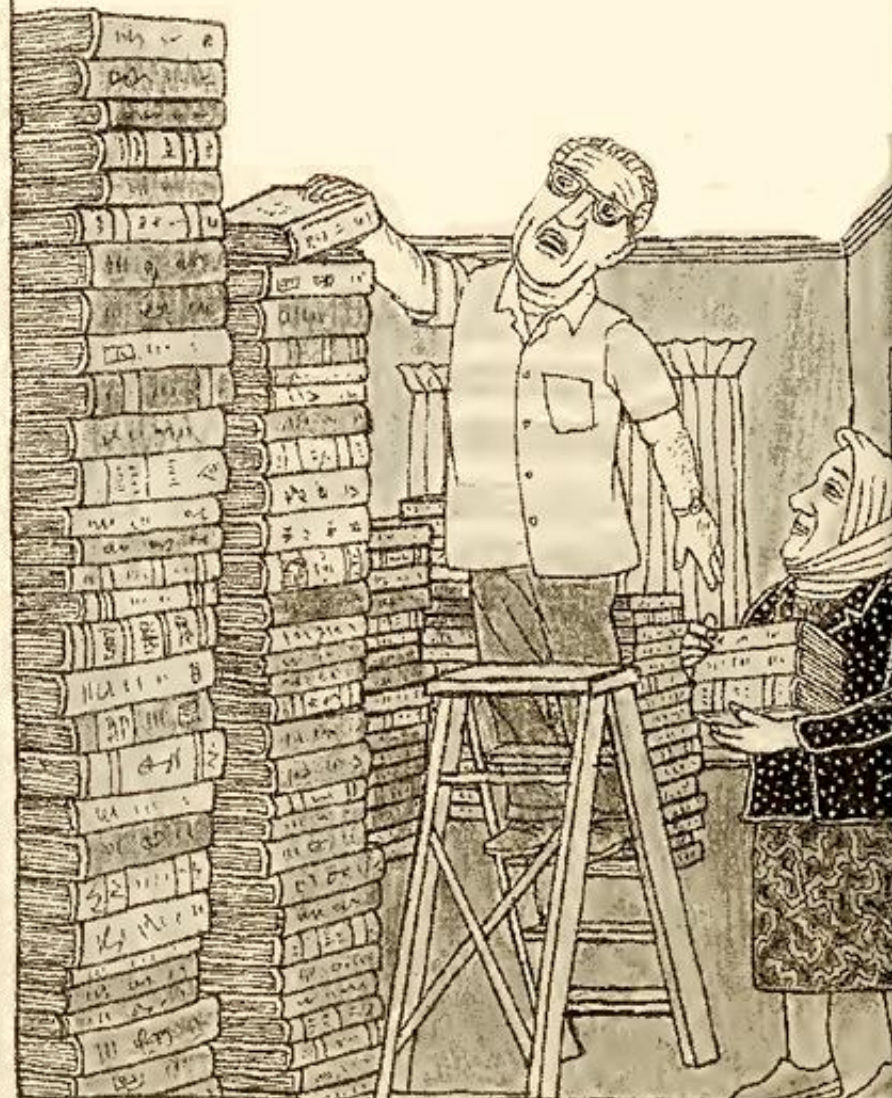
जल्द ही घर के सभी कमरे किताबों से लबालब भर गए. फिर हाल भी किताबों से भर गया और फिर गेस्ट रूम में भी सिर्फ किताबें ही थीं.

मुझे नहीं लगता है कि अब हम रात को रुकने के लिए किसी मेहमान को बुलाएंगे.

नहीं, मेहमान आएंगे. 40,000 बहुत विशेष मेहमान. अगर मुझे उन किताबों को यहाँ लाने का पर्याप्त समय मिला.

मैं यह मजाक क्यों कर रही हूं?! ... युद्ध बहुत तेजी से बढ़ रहा है! मेरे पास समय नहीं है!

कुछ दिन बाद उसके भय की पुष्टि हुई. ब्रिटिश लड़ाकू हवाईजहाज़ बसरा पर उड़ान भरने लगे.
आलिया ने अपनी खिड़की से झाँका. लोग सड़कों पर दौड़ रहे थे.
आलिया ने लाइब्रेरी को फोन किया. घंटी लगातार बजती रही. हर घंटी के साथ आलिया का दिल और तेज़ी से धड़कने लगा.
अंत में लाइब्रेरी के संरक्षक (कस्टोडियन) ने फोन उठाया.
सभी सरकारी अफसर और सैनिक सुबह लाइब्रेरी को छोड़कर चले गए. अब मेरे आलावा यहाँ और कोई नहीं है ...
... और बाहर लोग लूटपाट कर रहे हैं.
पुस्तकालय में कोई भी गार्ड नहीं है!
अगले दिन सुबह तड़के ही आलिया कार में लाइब्रेरी गई. फ़िक्र के मारे वो पूरी रात सोई नहीं.
सड़कों पर कोहराम मचा था, लोग सभी दिशाओं में इधर-उधर भाग रहे थे. उनके हाथों में लूटा हुआ माल था.
... सोफे, टेलिविजन, कपड़े, उपकरण, छोटे और बड़े आइटम.... वैन और कारों में, ठेलों और गाड़ियों में, और कुछ लोग पैदल ही ...
... कहीं दूर से युद्ध और विस्फोट की आवाज़ आ रही थी.... और यहां-वहां कोई इमारत जल रही थी जिसका काला धुआं आसमान में छाया था.
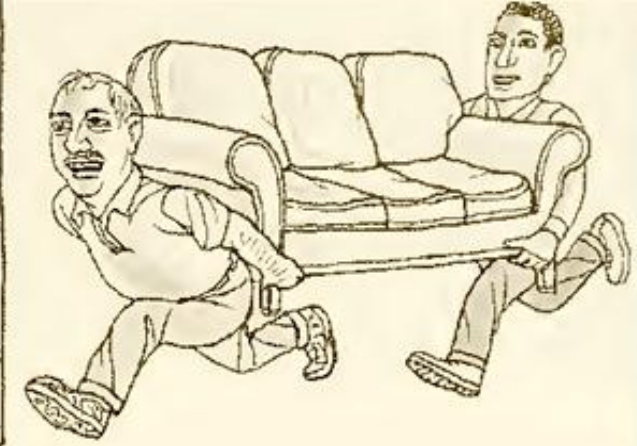
काफी देर के बाद आलिया लाइब्रेरी पहुँची. वो झट से अंदर घुसी. लुटेरे वहां आकर जा चुके थे. वे अपने साथ सब कालीन, कुर्सी-मेज़ें, बल्ब, पंखे, और जाने क्या-क्या नहीं ले गए.

अब समय बहुत कम है.

अनीस, आलिया का अच्छा दोस्त था. लाइब्रेरी के पास में ही उसका रेस्टोरेंट था.

ताज़िक! आलिया को हमारी मदद चाहिए! तुम सभी कर्मचारियों से संपर्क करो, मैं अपने भाइयों को भी बुलाता हूँ. हम लोग आधे घंटे में पुस्तकालय में मिलेंगे!
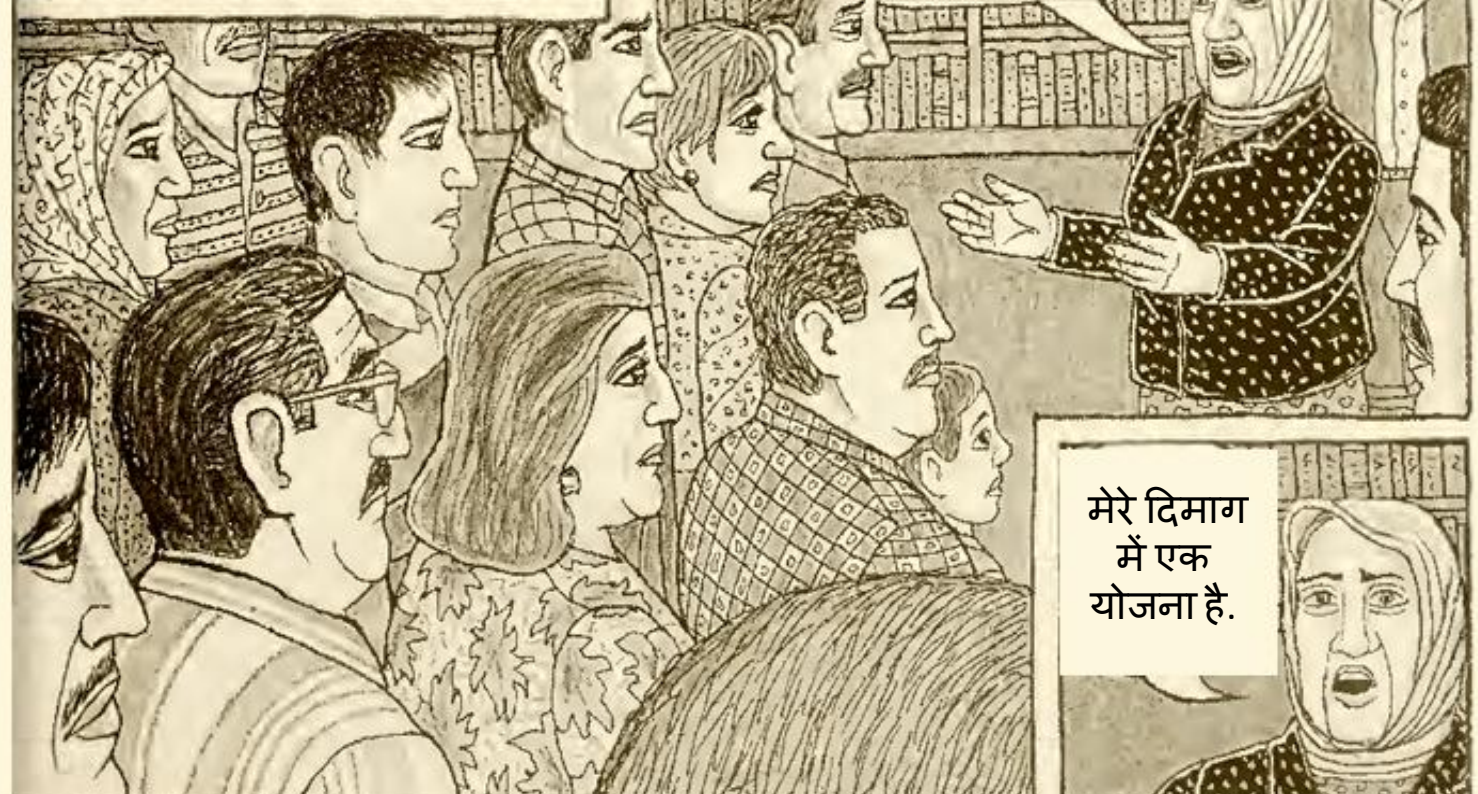
मीटिंग में आलिया ने कुछ कहा :

कुछ ही देर में सभी लोग योजना को लागू करने में शामिल हो गए.

एक समूह ने किताबों को लाइब्रेरी के शेल्फ से निकाला और लाइब्रेरी के पिछले दरवाज़े के पास सावधानी से उनके ढेर लगाए.

दूसरा समूह किताबों को लाइब्रेरी के बाहर एक ऊंची दीवार के पास ले गया. दीवार, अनीस के रेस्टोरेंट से सटी हुई थी.
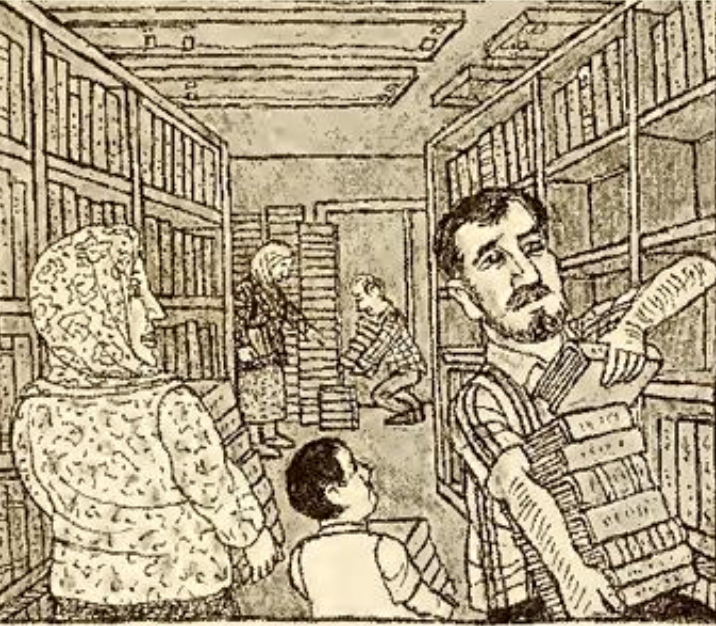
दीवार के पार किताबें, तीसरे समूह को सौंपी जाती थीं. वे लोग किताबों को रेस्टोरेंट में ले जाकर ऊंची-ऊंची थप्पियों में सजाते थे.
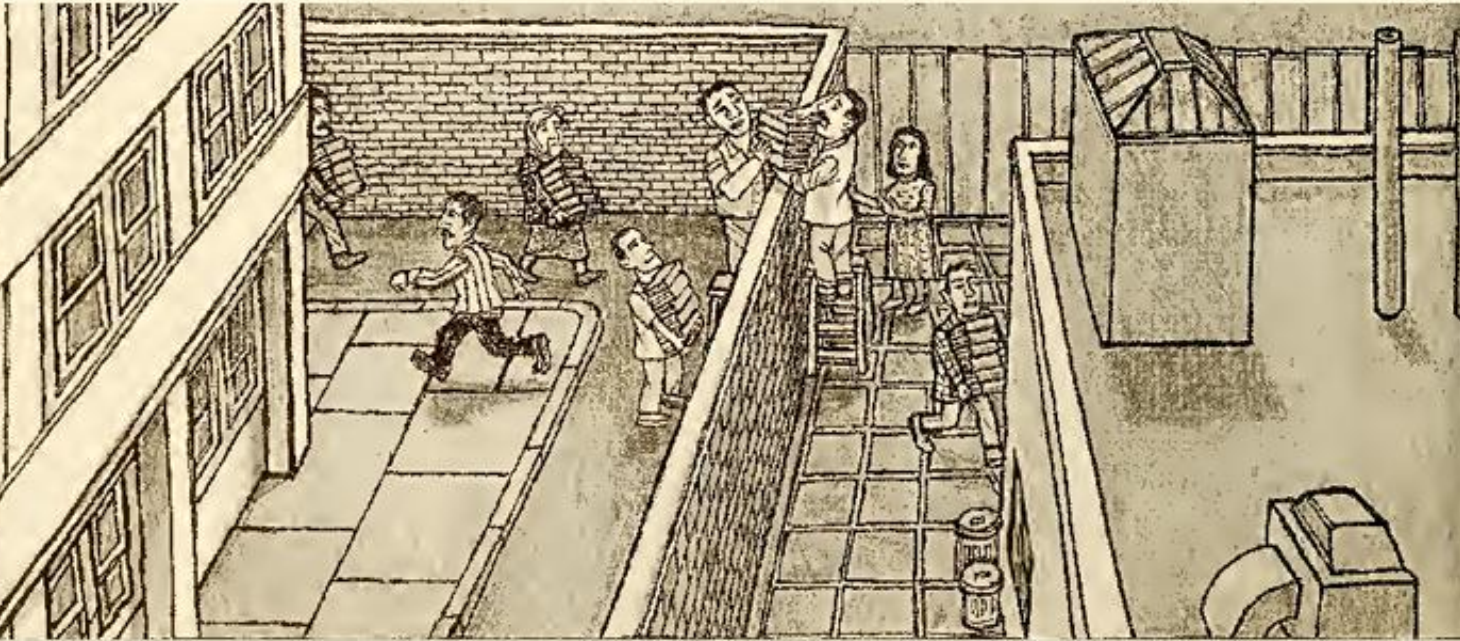
बहुत बड़ा काम था. सभी लोग दिन-रात काम करते रहे. सूरज निकला, पर वे अभी भी काम कर रहे थे. हर कोई थका था, लेकिन फिर भी सब काम में जुटे थे. दूर से बंदूकों और बमों की आवाज़ें आ रही थी.

जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया और अधिक स्थानीय लोग ... दुकानदार, पड़ोसी, राहगीर सभी इस मुहिम में शामिल होते गए ... उनमें कुछ लोग बहुत पढ़े-लिखे थे पर कुछ बिल्कुल निरक्षर थे.

सभी लोग पुस्तकों को बचाने की कोशिश कर रहे थे.

किताबों को कुछ भी नुकसान पहुंचा तो मुझे बहुत दुःख होगा.

युद्ध शुरू होने से पहले ही हम लोग किताबों का काम समाप्त कर लेंगे.

शायद उन्हें और लोगों की जरूरत पड़ेगी?

वे जितना अधिक थकते हैं वे उतनी ही ज़्यादा मेहनत से काम करते हैं.

हमें उनकी मदद करनी चाहिए!

मेरा इंतजार करना! मैं अपनी दुकान बंद करके तुम्हारे साथ आऊंगा

मैं लाइब्रेरी के काम में हाथ बंटाने जा रहा हूँ.

मुझे अच्छी तरह पढ़ना आता है! लाइब्रेरियन ने मुझे यह बताया!

मैं धीरे-धीरे करके पढ़ना सीख रहा हूँ!

युद्ध करीब और करीब आ रहा है.

एक भयानक दृश्य.
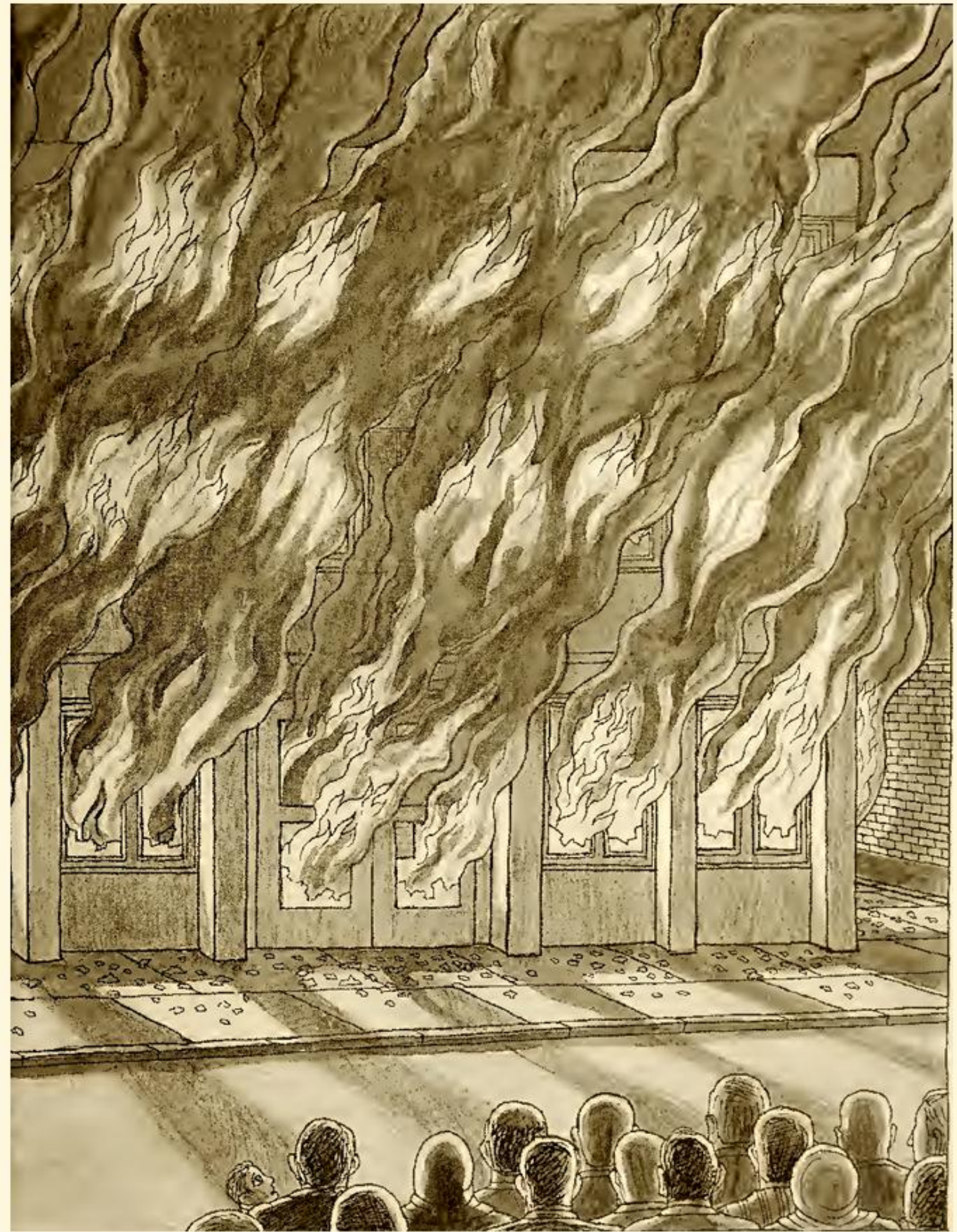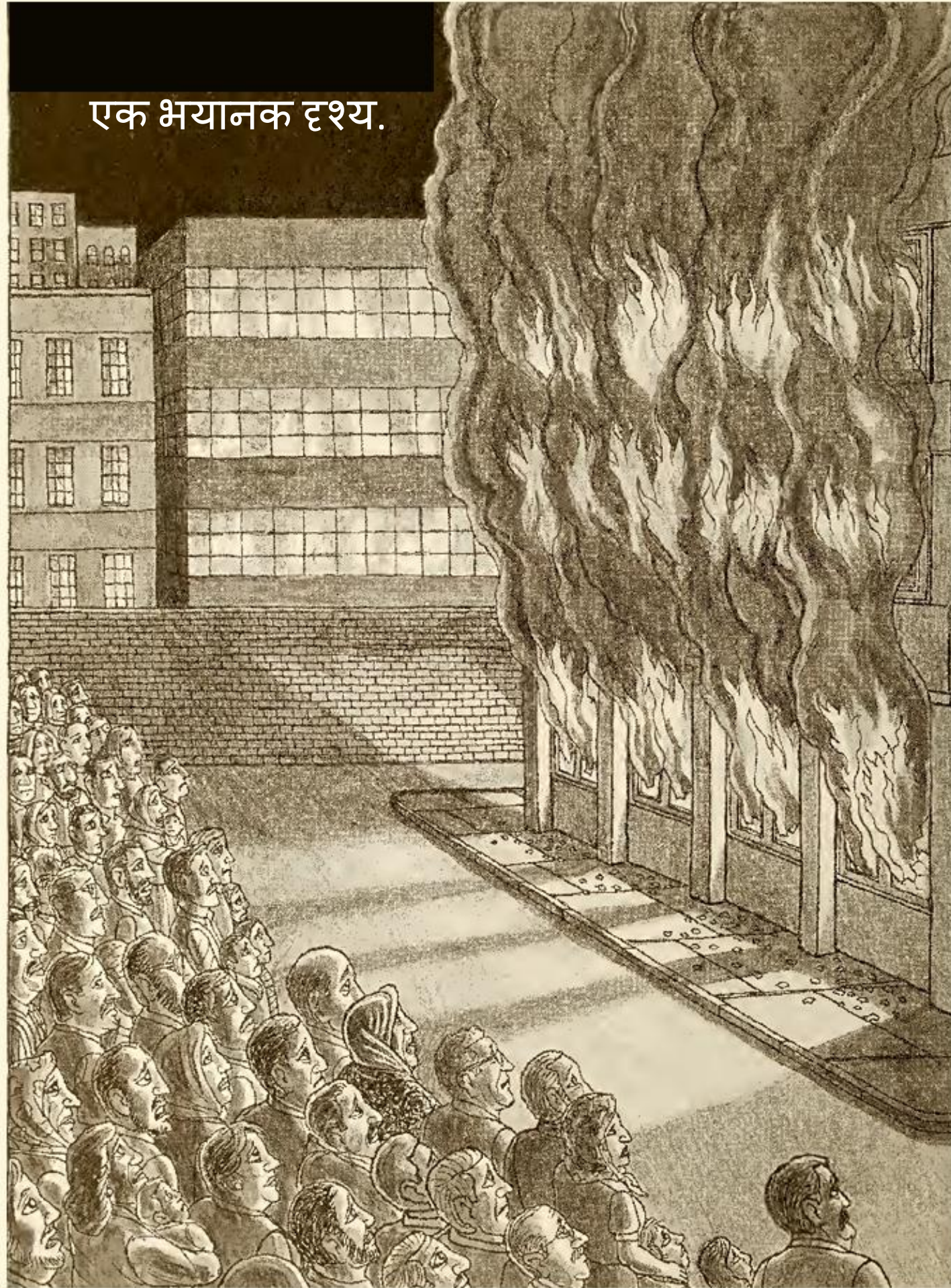
यह किसने किया? क्या हुआ?

हमें नहीं पता.

फायर-ब्रिगेड कहाँ है? यहां कौन इंचार्ज है?:

हमने ब्रिटिश सेना से मदद मांगी, लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया.

ऐसा नहीं होना चाहिए! हमने बहुत मेहनत की है?

हमने बहुत कुछ किया.

क्या आपको यह पता है कि हमने बहुत सारी किताबें बचाई हैं ...

पर वो पर्याप्त नहीं हैं!

लंबे समय तक आलिया वहीँ खड़े होकर आग को घूरती रहती है ....

.. यह पुस्तकें मेरे लिए लोगों जैसी ही हैं - ज़िंदा, सांस लेती हुई. वो मेरी सबसे अज़ीज़ दोस्त हैं...

आग धधकती रही और उसने लाइब्रेरी को अपनी गिरफ्त में लिया. अंत में सिर्फ कुछ अंगारे और राख ही बची.

फिर आलिया घर पर ही आराम करती है.
एक दिन, अनीस उससे मिलने आता है.
आप कैसा महसूस कर रही हैं?
काफी बेहतर.

...परंतु! अभी भी मुझे उन खोई हुई किताबों के बारे में सोचकर दुःख होता है.

लेकिन हमने किताबें खोईं कम, और बचाईं ज़्यादा......

पर...
मेरे कर्मचारियों ने रेस्टोरेंट में भरी सभी किताबों की गिनती की है.

इसके अलावा जो किताबें आपके घर पर हैं, सब मिलाकर वो तीस हज़ार से ज़्यादा किताबें होंगी!

30,000?!

बिल्कुल सही..

वो तो बहुत सारी किताबें हुईं!

जैसे ही आलिआ की तबियत ठीक हुई,
उसने और उसके पति ने एक ट्रक किराए पर लिया.

बहुत सारे दोस्तों की मदद से उन्होंने सारी किताबों को रेस्टोरेंट से निकालकर
कई मित्रों और पड़ोसियों के घर में ट्रांसफर किया.

चित्रों वाली किताबें यहाँ ... इतिहास वाली किताबें वहां.

अब रिटायर होने से पहले
आलिया के सामने एक अन्य
बहुत बड़ी चुनौती है.
एक आलीशान लाइब्रेरी
डिजाइन करना और उसका
निर्माण करवाना.

वो एक बहुत बड़ा काम है,
जिसमें तमाम अलग-अलग लोग
- नागरिक,
आर्किटेक्ट, दान-
एजेंसी, बिल्डर
आदि के सहयोग
की ज़रुरत होगी....

आलिया को पुस्तकों और
लाइब्रेरी से इतना प्यार है
इसलिए वो उसमें अपना पूरा
दिल लगाती है.
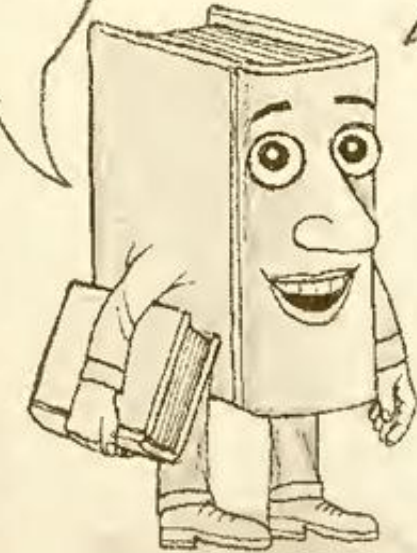
पर वैसे उसका
दिल ख़ुश है.
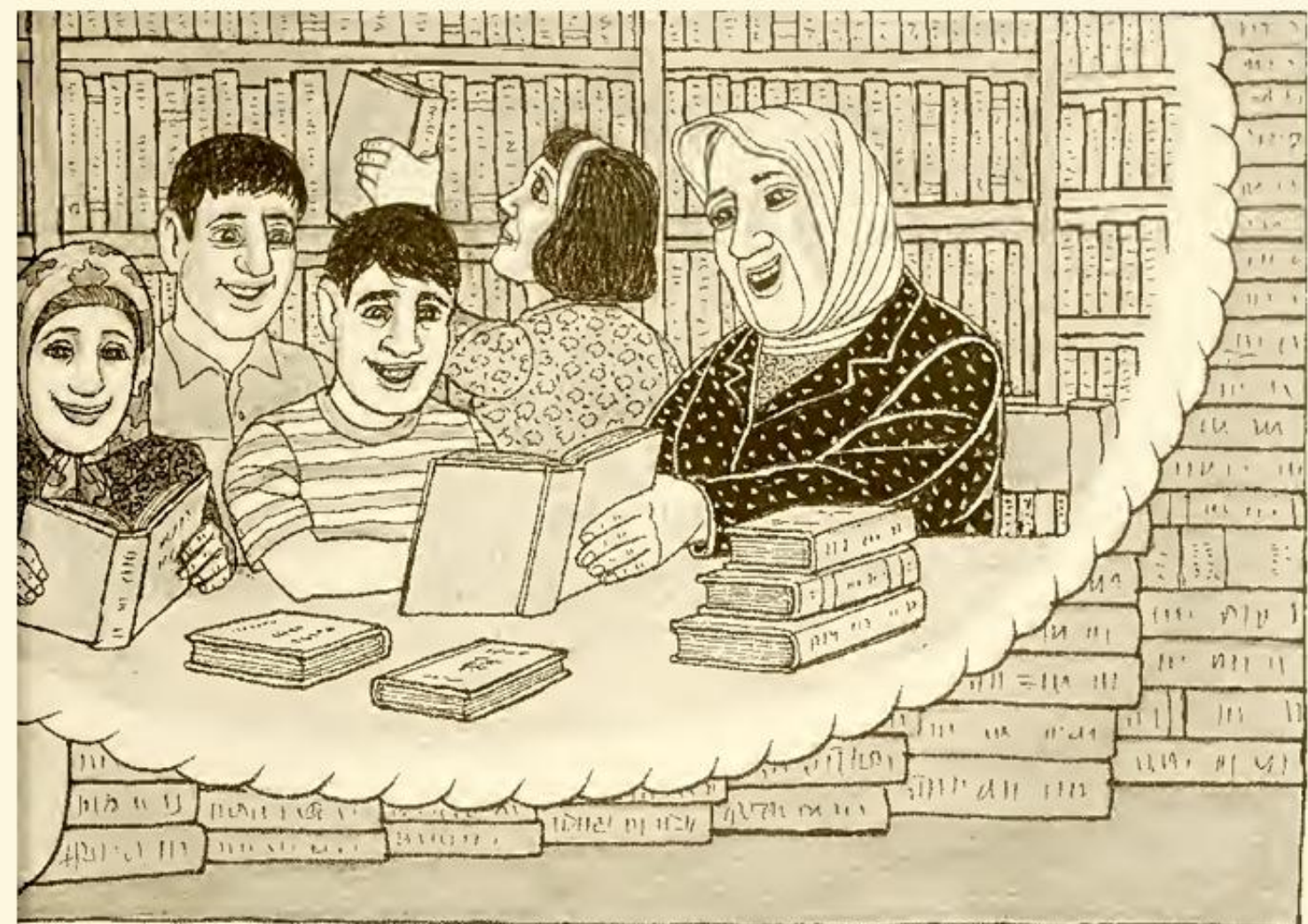
आलिया की कहानी इराक और मध्य-पूर्व में पुस्तकालयों के लंबे और आकर्षक इतिहास में सिर्फ एक नई कड़ी है. यहां कुछ अन्य कहानियां हैं जिन्हें आप शायद न जानते हों ...

ईराक कहलाने वाली भूमि सच में सभी लिखित भाषाओँ का जन्मस्थान थी. पांच हजार साल पहले, लगभग 3500 ईसा पूर्व में, प्राचीन सुमेरियों ने गीली मिट्टी की तख्तियों पर दलदल में पाई जाने वाली नरकट की पच्चर से आकारों के चिह्न बनाए थे. तेज धूप में सेंकने के बाद मिट्टी में उनकी स्थायी छाप पड़ जाती थी. इस लेखन को "क्यूनीफॉर्म" कहा जाता था. इन क्यूनीफ़ॉर्म तख्तियों के संग्रह से दुनिया के पहले पुस्तकालय बने.

मध्य-सीरिया के प्राचीन शहर एल्बा में, लकड़ी के अलमारियों में पंद्रह हजार से अधिक मिट्टी की तख्तियों का एक व्यापक महल पुस्तकालय था. 2250 ईसा पूर्व में अक्कादियन आक्रमणकारियों ने पूरे शहर को नष्ट कर दिया था. लेकिन 1980 में एक इतालवी पुरातत्वविद् ने मिट्टी के दो हजार से अधिक दस्तावेजों को अभी भी संजोकर रखा है!

मिट्टी की यह तख्तियां चार हज़ार वर्षों की रगड़ के बाद कैसे जीवित रहीं? एल्बा के दो हज़ार साल बाद मिस्र के महान अलेक्जेंडरियन पुस्तकालय में रखे पांच लाख से अधिक ग्रंथ पूरी तरह नष्ट हो गए. दोनों पुस्तकालयों को जला दिया गया. पर एल्बा की लाइब्रेरी में क्या फर्क था?

अंतर यह था कि अलेक्जेंड्रिया की लाइब्रेरी में पांडुलिपियाँ पपीरस की बनी थीं - वे पतले कागज की तरह, छीले हुए पौधों से बने स्क्रॉल थे. कागज की तरह, पपीरस भी बहुत आसानी से जलता है. पर एल्बा की मिट्टी की तख्तियों को आग ने और अधिक कठोर बना दिया, जिससे वे और अधिक टिकाऊ बन गईं. एल्बा को जलाने से, उसके विजेता ने अनजाने में शहर के साहित्य की रक्षा की!

महान बग़दाद पुस्तकालय के जलने की कहानी ने आलिया पर बचपन में गहरी छाप छोड़ी थी. 1258 सीई के मंगोल आक्रमण में, केवल एक हफ्ते में, मंगोलियाई नेता हुलगु खान ने शहर के लगभग सभी 36 सार्वजनिक पुस्तकालयों में तोड़फोड़ की थी. किंवदंती के अनुसार टाइग्रिस नदी में इतनी किताबें फेंकी गईं कि स्याही से उसका पानी नीला हो गया था.

निज़ामियाह पुस्तकालय गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त हो गया लेकिन मंगोल आक्रमणों से नष्ट नहीं हुआ. वास्तव में, वो आज भी दुनिया का तीसरा सबसे पुराना पुस्तकालय है. आलिआ की लाइब्रेरी भी काफी मुश्किलों से गुज़री. बसरा सेंट्रल लाइब्रेरी में व्यापक मरम्मत का काम चल रहा है. पुस्तकालय का पूरी तरह से नवीनीकरण होगा, वहां इंटरनेट सेवाओं के साथ-साथ एक कंप्यूटर लैब और स्थानीय बच्चों के लिए एक समर-स्कूल कार्यक्रम जैसी नई सेवाएं भी होंगी. सबसे महत्वपूर्ण बात होगी कि लाइब्रेरी में हज़ारों की संख्या में पुरानी पुस्तकें मिलती रहेंगी. आलिया और उसके दोस्तों ने इराक की अनमोल सांस्कृतिक वसीयत को बचाने के लिए जो मेहनत की थी, वो बेकार नहीं जाएगी.